

**सुंदरम्मन्य वि.** (तत्.) 1. अपने को सुंदर समझने या मानने वाला 2. आत्म मोहित।

**सुंदरी स्त्री.** (तत्.) रूपवान या सुंदर स्त्री, रूपवती।

**सुंदोपसुंद न्याय पुं.** (तत्.) एक प्रकार का न्याय जिसका प्रयोग ऐसे अवसरों पर किया जाता है जब दो शक्तिशाली एवं प्रेमी व्यक्ति किसी स्वार्थ वश आपस में ही लड़ मरते हैं।

**सुंदोपसुंदा पुं.** (तत्.) सुंद और उपसुंद नाम के दो राक्षस भाई जो तिलोत्तमा नाम की अप्सरा को पाने के लिए आपस में ही लड़ मरे, इन्हें यह वरदान था कि वे तब तक नहीं मरेंगे जब तक वे एक दूसरे को न मारें और ऐसा वरदान उन्होंने इसलिए माँगा था कि उन्हें एक दूसरे के प्रति बहुत प्यार था, एक दूसरे को मारने की बात वह सोच भी नहीं सकते थे।

**सुंबा पुं.** (तत्.) 1. गीला कपड़ा जिसे तोप की गरम नाल को ठंडा करने के लिए उसके ऊपर रखा या लपेटा जाता था 2. तोप की नाल साफ करने का लोहे का डंडा 3. लोहे में छेद करने का एक प्रकार का औजार 4. इस्पंज।

**सुंसारी/सुरसुरी स्त्री.** (देश.) दे. अनाजों में लगने वाला एक काले रंग का कीड़ा।

**सु उप.** (तत्.) 1. एक संस्कृत उपसर्ग जो प्रायः संज्ञाओं और विशेषणों से पहले लगाया जाता है और अच्छे, उत्तम या भले का भाव प्रगट करता है जैसे सुगंध, सुसंगति, सुमार्ग, सुपंथ, सुचारु आदि 2. मनोहर या सुंदर जैसे सुदर्शन, सुवाच्य 3. पूर्णतः भली भांति जैसे सुव्यवस्थित 4. सरलतापूर्वक, सहज रूप से जैसे सुकर, सुगम 5. बहुत अधिक जैसे सुदीर्घ, सुविचारित 6. मांगलिक, शुभकर जैसे सुदिन, सुअवसर 7. उचित, पात्र, अधिकारी जैसे सुपात्र पुं. 1. सुंदरता, खूबसूरती 2. उन्नति, उत्कर्ष 3. आनंद, प्रसन्नता 4. समृद्धि 5. अर्चन, पूजन 6. अनुमति, सहमति।

**सुअ पुं.** (तद्.) दे. सुत, सुत्र, बेटा।

**सुअन/सुवन पुं.** (तद्.) पुत्र, बेटा वि. स्वर्ण, सोना।

**सुअर पुं.** (तद्.) एक पशु, शूकर, सूअर।

**सुअर वि.** (तद्.) दे. 1. सुघड़, जो अच्छी तरह घड़ा/गढ़ा गया हो 2. सुडौल, सुंदर 3. निपुण, होशियार 4. आसानी से बनाने योग्य।

**सुअरदंता वि.** (तद्.) सुअर के समान दाँतों वाला।

**सुअर-दाड़ स्त्री.** (तद्.) एक प्रकार का रोग जिसमें मसूड़ों में अंकुर से निकलने लगते हैं।

**सुअर-बियान पुं.** (तद्.) 1. मादा सुअर की तरह अनेक बच्चे पैदा होना 2. जिस स्त्री के अनेक बच्चे हों।

**सुअर-मुखी स्त्री.** (तद्.) एक प्रकार की बड़ी ज्वार (अनाज) जिसकी बाली की शकल सुअर के मुँह जैसी लगती है।

**सुअर्ग पुं.** (तद्.) दे. 1. स्वर्ग 2. आसमान।

**सुअर्ग पताली पुं.** (तद्.) स्वर्ग और पाताल, "जिह्वा ऐसी बावरी कह गई सरग-पताल"-कबीर।

**सुआ पुं.** (तद्.) 1. तोता, शुक 2. बड़ी और मोटी सुई जिससे टाट, बोरे आदि सीले जाते हैं, सूजा, सूआ।

**सुआन पुं.** (देश.) एक प्रकार का बड़ा वृक्ष जिसके पत्ते हर वर्ष झड़ जाते हैं, इसकी लकड़ी हल्की और मजबूत होने के कारण ईमारत और नाव आदि बनाने के काम आती है।

**सुआर पुं.** (तद्.) रसोइया, भोजन बनाने वाला, सूपकार।

**सुआरव वि.** (तद्.) कर्ण-मधुर शब्द बोलने या करने वाला, उत्तम शब्द, सुरीला।

**सुआसिन/सुआसिनी स्त्री.** (तद्.) 1. सौभाग्यवती, सधवा 2. दे. सुहासिनी, सुंदर रूप में हसने वाली 3. आस-पास में रहने वाली स्त्री 4. सुवासिनी, जिसके शरीर से सुगंध निकले।

**सुआहित पुं.** (तद्.) तलवार के 32 हाथों में से एक हाथ।

**सुइना पुं.** (तद्.) स्वर्ण, सोना।